

class - B-A. Part 1
Sub - Hindi (Sanskrit) - Com - 100
by Ravisham Kumar

① 'कर्मवीर' शीर्षक कविता का
भावार्थ स्पष्ट करें ?
हमारी पाठ्य-पुस्तक में संकलित
आधुनिक काल के विवेकी युग
के महान कवि श्री अयोध्या सिंह
उपाध्याय हरिऔध की एक अविस्मर-
णीय रचना है जिसमें कवि
ने एक सच्चे कर्मठ, लगनशील
ईसान की पहचान बतायी है।
कवि की दृष्टि में कर्मवीर
वह है जो लाख मुसीबत आने
पर भी घबराने नहीं है।
उसके सामने कितना ही कठिन
काम क्यों न हो, वे उसे पूरा
करके दिखलाते हैं। कवि का
मानना है कि वे भीड़ में भी
धीरे-धीरे सब साहस का परिचय
देते हैं। इतना ही नहीं वे दूसरे
व्यक्ति का दिल भी अपने कर्म
से जीत लेते हैं। यदि उन्हें दुख
भोगना पड़ता है तो वे अपने
भाग्य को दोषी नहीं ठहराते हैं।
वे पुरे दिन में भी अपने आप
को सखी व संपन्न समझते हैं।

प्रस्तुत कविता में कवि ने दिखलाया है कि कर्मवीर वह है जो व्यर्थ में अपना समय कमी नहीं खिलाना है, वह व्यक्ति सिर्फ अपने काम में लगा रहता है, वह काम करने की जगह ढाँपे नहीं लगाता। कवि का मानना है कि दुनिया का ऐसा कोई काम नहीं है जिसो वह नहीं कर सकता। उसके सामने कठिन-से कठिन काम भी आसान सा लगता है। वह व्यक्ति किसी भी काम के लिए दूसरे का इंतजार नहीं करता।

कवि की दृष्टि में कर्मवीर व्यक्ति विषम परिस्थितियों में भी दुर्गम पहाड़ों पर अपना जीवन व्यतीत करने में सक्षम है। उसे घने जंगल में भी जहाँ बाघ और सिंह बादलों की तरह गारजते हैं, और जिसकी गार्जन सुनकर हर एक व्यक्ति का कलेजा कांप उठता है, वे अपना समय व्यतीत करने में सक्षम हैं।

प्रस्तुत, यह कविता हम सब के लिए प्रेरणादायी है, इसके मावो को अपनाकर एक समृद्ध राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।